हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL5**

निर्धारित समयः तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंकः 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): DIPTI DEO

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 5 – 07/09/17

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	0	9	7	4	8	6

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

उत्तर हिन्दी (देवनागरी लिपि) में ही लिखे जाएंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 86½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है सभी 5 प्रश्नों को हल करने का प्रयास करें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) यूनीकोड और हिन्दी

यूनीकोड एक अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर है जो विश्व की सभी भाषाओं की लिपियों के लिए एक अद्वितीय कुंजीपटल कोड सृजित करता है। हिन्दी भाषा के कम्प्यूटरीकरण में इसका आगमन एक युगान्तकारी घटना है।

वर्तमान तकनीकि विकास का मूलाधार कम्प्यूटर ही है। कम्प्यूटर के क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग यूनीकोड के आगमन से पूर्व अत्यंत सीमित था। कारन यह कि, आधुनिक साफ्टवेयर एवं एप्लीकेशन सभी निर्देश अंग्रेजी भाषा में ही लेते थे। यूनीकोड के आगमन से एक व्यापक धरातल सृजित हुआ जिसपर किसी भी भाषा में कमाण्ड देने पर कम्प्यूटर कार्य कर सकता है।

तकनीकी

यूनीकोड की सफलता का मुख्य कारण इसके 'मेमोरी आधार' का बड़ा होना है। पूर्वतर साफ्टवेयर 8 बिट के थे जिससे कुल चिह्नों की संख्या कम होती थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

यूनीकोड का मेमोरी आधार 16 बिट का है। अतः इसके माध्यम से विश्व की लगभग सभी भाषाओं की लिपियों के लिए प्रतीक चिह्न निर्मित किये जा सकते हैं।

यूनीकोड के आगमन से हिन्दी भाषा का तकनीकि विकास अभूतपूर्व हुआ। हिन्दी टाइपिंग तो अब कम्प्यूटर के क्षेत्र में एक आसान कार्य हो गयी है। साथ ही 'स्पीच टू टेक्स्ट' एवं स्कैन फाइल को 'टेक्स्ट फाइल में परिवर्तित करना भी संभव हो सकता है।

यूनीकोड के इसी महत्व के कारण हिन्दी कवि अशोक चक्रधर ने कहा है

"सबको प्यारी अपनी भाषा
यूनीकोड से जागी आशा।"

अच्छा

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी में वैज्ञानिक लेखन में जयन्त विष्णु नार्लीकर का योगदान

आधुनिक युग विज्ञान का युग होने के साथ ही 'जनता' का भी युग है। इन दो गुणों से युक्त समय को एक साथ मिलाने के लिए विभिन्न भाषाओं में वैज्ञानिक लेखन का कार्य किया जा रहा है। हिन्दी में जयन्त विष्णु नीलीकर इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण नाम है।

जयन्त विष्णु नीलिकर मूलतः नवीन वैज्ञानिक सिद्धान्तों को जनता तक पहुँचाने के लिए जनप्रिय भाषा हिन्दी में लेखन का कार्य कर रहे हैं। इनके द्वारा हिन्दी की वैज्ञानिक एवं तकनीकि शब्दावली आयोग द्वारा निर्मित विभिन्न वैज्ञानिक शब्दों के प्रयोग से ये शब्द अब लोकप्रिय होने लगे हैं।

नीर्लीकर महोदय ने आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में लेखों के माध्यम से विज्ञान को जनता से जोड़ने का कार्य किया ~~गया~~ है।

उनके द्वारा लिखित पुस्तकों का भी उल्लेख करें।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

उनका योगदान अनुवाद कार्य मे भी अत्यन्त सराहनीय है। अंग्रेजी की विभिन्न पुस्तकों को हिन्दी में अनूदित कर हिन्दी में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार का कार्य किया गया है।

अतः स्पष्ट है कि नौलीहर महोदय ने हिन्दी में वैज्ञानिक लेखन के क्षेत्र में बहुआयामी योगदान दिया है।

5/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयत्न

आधुनिक तकनीकी विकास का मूलाधार कम्प्यूटर ही है। इस नयी युक्ति के लिए देवनागरी लिपि को उपयुक्त बनाना ही लिपि का कंप्यूटरीकरण है।

लिपि के कंप्यूटरीकरण के दो आयाम हैं- 1- सिस्टम सॉफ्टवेयर के लिए
2- एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर के लिए

सिस्टम सॉफ्टवेयर के लिए अभी तक- देवनागरी या हिन्दी भाषा- किसी का भी भारतीय भाषा एवं लिपि का प्रयोग नहीं किया जा सका है।

एप्लीकेशन के क्षेत्र में देवनागरी के आरंभिक प्रयास हुए। इस क्षेत्र में पुणे स्थित C-DAC का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके माध्यम से विभिन्न 'एप्लीकेशन्स' विकसित किए गये जो देवनागरी को हिन्दी कम्प्यूटर के साथ जोड़ते हैं।

आरंभिक सॉफ्टवेयर में प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ इत्यादि हैं जो देवनागरी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

-लिपि को कंप्यूटर के क्षेत्र में प्रयोग को आसान बनाते हैं।

देवनागरी को कंप्यूटर के क्षेत्र मे प्रयोग के लिए प्रमुख चुनौती टंकड़ की थी। वर्तमान में यूनीकोड के आ जाने से यह समस्या भी हल हो गयी है।

अतः कहा जा सकता है कि ये कंप्यूटरीकरण के आरंभिक प्रयास ही थे जो देवनागरी को आज इस क्षेत्र में दिन प्रतिदिन व्यापक बनाते जा रहे हैं।

टंकण

अच्छा

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) विकारी और अविकारी पद

पदों के दो प्रकार होते है

- विकारी
  - संज्ञा
  - सर्वनाम
  - क्रिया
  - विशेषण
- अविकारी
  - क्रिया विशेषण
  - संबंध बोधक
  - समुच्चय बोधक
  - विस्मयादि बोधक

विकारी पद: विकारी पद वे पद होते है जो लिंग, वचन, काल भाव, वाच्य एवं पुरुष के परिवर्तन से परिवर्तित होते रहते हैं।

1 संज्ञा: किसी वस्तु, स्थान, व्यक्ति, समूह, द्रव्य, भाव, विचार या मनः स्थिति के नाम को संज्ञा कहते हैं। यह विकारी तत्व है।
जैसे - बालक - बालिका

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सर्वनाम: संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला तत्व है।
उदा:- उसका उसकी
क्रिया: जिससे किसी कार्य का होना लक्षित हो।
उदा-- लिखता है लिखती है।
विशेषण: संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। ~~उसका~~ अच्छा, अच्छी
क्रियाविशेषण: क्रिया की विशेषता बताते है। विकार नहीं आता।
उदा० तेज लिखता है। ~~&~~ तेज लिखती है
संबंध बोधक: इनमे भी विकार नहीं आता
समुच्चय बोधक: जो दो वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ते है।
जैसे तथा, क्योंकि, परन्तु
विस्मयादि बोधक: अरे!, अहा! इत्यादि

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मानक हिन्दी की वाक्य-संरचना

वाक्य किसी भाषा में अर्थबोधन की न्यूनतम इकाई है। हिन्दी वाक्य में अर्थबोधन के लिए निम्नलिखित 3 तीन आवश्यक शर्तें मानी गयी हैं।

1. सन्निधि
2. आँकांक्षा
3. योग्यता

वाक्य के प्रकार

- सरल
- संयुक्त
- मिश्र

सरल वाक्य : जिसमें एक उद्देश्य व एक विधेय हो।

उदा. परीक्षार्थी उत्तर लिख रहा है।

जब दो वाक्य आपस में जुड़ते हैं तो उनमें दो प्रकार के संबंध बनते हैं - समानाधिकरण
 └ व्याधिकरण

समानाधिकरण संबंध पर आधारित वाक्य संयुक्त वाक्य कहे जाते हैं जैसे राम उत्तर लिख रहा है जबकि श्याम बैठा है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्याधिकरण संबंध पर आधारित वाक्य मिश्र वाक्य कहे जाते हैं।
उदा॰ उसने कहा कि लिखो पर मैंने कहा, नहीं।

इसके अतिरिक्त विभिन्न आधारों पर वाक्यों में भेद किए गये हैं। भाव के आधार पर

सकारात्मक/विधेयात्मक | निषेधात्मक | निश्चयात्मक | अनिश्चयात्मक | प्रेरणार्थक

हिन्दी में वाक्य में पदों का क्रम एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम पर आधारित है यह क्रम इस प्रकार है.
संबोधन | → कर्ता, → अधिकरण → संबंध → अपादान संप्रदान — करण — कर्म।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी में वाक्य संरचना वैज्ञानिकता के साथ व्यवहारिकता भी धारण करती है।

अच्छा

6/16

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये। 20

हिन्दी भाषा की लिपि के रूप में देवनागरी संविधान के अनुच्छेद 343 में स्थापित है। देवनागरी का लम्बा ऐतिहासिक विकास क्रम रहा है जिसमें इसने विभिन्न कालों एवं क्षेत्रों में भाषा की लिपि के रूप में कार्य किया। यूं तो यह एक वैज्ञानिक लिपि है, किन्तु विद्वानों ने इसके दोषों को भी निकाला है, जिससे सुधार किया जाए।

सर्वप्रथम इसके दोष के रूप में इसकी वर्णमाला आती है। वर्णमाला में विभिन्न स्वरों व्यंजनों एवं आयोगवाह ध्वनियों को मिलाकर कुल 59 ध्वनियाँ बनती हैं। आधुनिक ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में इतनी ध्वनियाँ वैज्ञानिक नहीं मानी जाती। वर्णमाला में अनेक ध्वनियाँ अभी तक बनी हैं जिनका उच्चारण हम भूल गये हैं जैसे ऋ, ॠ, ऌ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

वर्णमाला के पश्चात समस्या का सेत्र है ध्वनि संकेत। वैज्ञानिक लिपियों में ध्वनियों के लिए एक और केवल एक ही संकेत होते हैं जबकि देवनागरी में कुछेक ध्वनियाँ हैं जिनके एकाधिक संकेत है जैसे · ण → रा ; अ — अ ; भ → म - ध - ल

स्वरों में भी अवैज्ञानिकता बताई गयी है। स्वरमाला भी लंबी है। इसमें कुल 12 ध्वनियाँ हैं जबकि अंग्रेजी में मात्र 5।

दोषों का विवेचन करने के क्रम में देवनागरी में शिरोरेखा के संबंध में भी आरोप लगे हैं। शिरोरेखा से प्रयत्न एवं समय दोनों में अधिकता आती है।

अनुनासिक्य व्यंजनों के प्रयोग में द्विरूपता के कारण समस्या आती है
गंगा → गङ्गा   पंचम - पञ्चम

संयुक्त व्यंजन एवं व्यंजन संयोग के समय भी कोई निश्चित वैज्ञानिक नियम नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जैसे – प्रथम, पर्यंक, प्रज्ञ
यहाँ 'र्' के लिए द्विरूपता है।

इसके अतिरिक्त मात्रा व्यवस्था में भी अवैज्ञानिकता को देखा गया है जैसे बड़ी, बढ़िया 'इ' एवं 'ई' के लिए विसंगति।

देवनागरी को सीखने के लिए अंग्रेजी की भांति बस '।' '–' एवं '0' जैसे चिह्नों की अपेक्षा अधिक चिह्न की आवश्यकता है।

अतः हम देखते हैं कि देवनागरी के वर्तमान प्रयुक्त रूप में अभी भी कुछ दोष हैं। किन्तु, यह नहीं भूलना चाहिए कि देवनागरी एक विकासमान लिपि है आगे मानकीकरण के प्रयासों द्वारा इन्हें दूर किया जा सकता है जिससे इस लिपि की वैज्ञानिकता में वृद्धि होगी।

अच्छा
11½
20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright –, Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 15

प्रकृति अपने विकास के लिए दो लिंगो की व्यवस्था की जो कि विभिन्न भाषाओं में क्षेत्रीय संस्कृति के माध्यम से व्यक्त होती है। हिन्दी भाषा में दो लिंग स्वीकार किया गया है। (पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग)

प्रथमतः यह स्पष्ट करना उचित होगा कि हिन्दी की लिंग व्यवस्था संस्कृत भाषा एवं अंग्रेजी से भिन्न है। संस्कृत में जहाँ इन दो के अलावा नपुंसक लिंग स्वीकृत है, वहीं अंग्रेजी में 'Neutral' एवं 'Common' के नाम से दो लिंग और स्वीकृत है।

हिन्दी में लिंग निर्धारण सामान्यतः व्यावहारिक नियमों पर आधारित है। सामान्यतः स्त्रीलिंग संज्ञाएँ आकारान्त एवं इकारान्त होती हैं जैसे बालिका

लिंग परिवर्तन का नियम भी व्यावहारिकता को ध्यान में रखकर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

किया गया है। सामान्यत: प्रत्ययों
के माध्यम से परिवर्तन किए जाते हैं।
इसके लिए आइन, इन, ई, आ इत्यादि
प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है
जैसे - मास्टर - मास्टराइन

हिन्दी मे लिंग निर्धारण की कुछ
व्यावहारिक समस्याएं आती हैं। इसका
मुख्य कारण दो लिंगो का होना है।
प्राकृतिक-भौतिक पदार्थों, पदनामों एवं
देशज भाषा के शब्दों के लिंग के
निर्धारण में समस्या आती है।

अत: हम देखते हैं कि हिन्दी
की लिंग व्यवस्था व्यावहारिक नियमों
पर आधृत होने के कारण कुछ भवैज्ञानिक
धारण किए हैं। किन्तु यह भी नहीं
भूलना होगा कि भाषाएँ उनके
प्रयोक्ता समुदाय की संप्रेषण सुविधा के
लिए ही होती हैं, इसमें हिन्दी चरम
सफल है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अच्छा

8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) मानक हिंदी के विकास में श्री किशोरीदास वाजपेयी के योगदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा वर्तमान में अपने जिस रूप में राजभाषा, राष्ट्रभाषा संपर्क भाषा के रूप में प्रतिष्ठित है, वह संयोग मात्र नहीं है। यह एक ऐतिहासिक विकास यात्रा का परिणाम है। इस यात्रा में पंडित किशोरी दास वाजपेयी का योगदान विचारणीय है।

पंडित वाजपेयी द्विवेदी युगीन भाषाविद हैं। यह वह युग था जब हिन्दी साहित्य में भाषाई द्वैत बना हुआ था और खड़ी बोली पर कविता के लिए उपयुक्त न होने का आरोप लग रहा था।

पंडित वाजपेयी जी ने आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के कुशल नेतृत्व, कठोर अनुशासन एवं प्रेरणादायी व्यक्तित्व के प्रभाव से हिन्दी के मानकीकरण हेतु व्याकरण की पुस्तक 'हिन्दी शब्दानुशासन' लिखी।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

व्याकरण भाषा का मूलाधार होता है। इसके क्षेत्र में भाषा को ठोस वैज्ञानिक आधार प्रदान कर वाजपेयी जी ने हिन्दी की वैज्ञानिकता को पुष्ट किया।

मानकीकरण के क्षेत्र में उनके कुछ सुझाव निम्नलिखित हैं-

1- परसर्गों को संज्ञा से पृथक कर लिखा जाए

2. सर्वनाम के साथ परसर्ग जोड़कर लिखा जाए।

3. यदि सर्वनाम के साथ दो परसर्ग हो तो प्रथम को जोड़कर एवं दूसरे को अलग कर लिखा जाए।

अतः स्पष्ट है कि पंडित वाजपेयी जी ने हिन्दी के व्याकरण के साथ-2 लिपि के मानकीकरण के लिए भी उल्लेखनीय योगदान दिया।

अच्छा
8½/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर प्रकाश डालिये। 20

लिपि की वैज्ञानिकता से तात्पर्य उसमें निहित व्यवस्था एक एक ठोस तार्किक आधार से है। इस दृष्टिकोण से देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का परीक्षण किया जा सकता है।

~~सब~~ लिपि की आधारभूत इकाई उसकी ध्वनि व्यवस्था होती है। यह वर्णमाला के रूप में व्यक्त होती है। हिन्दी की वर्णमाला अत्यंत वैज्ञानिक है। इसमें सर्वप्रथम सभी स्वर एक साथ आ जाते हैं। तत्पश्चात् व्यंजन आते हैं।

व्यंजन व्यवस्था भी अत्यंत वैज्ञानिक नियम पर आधारित है। उच्चारण स्थान क्रमशः कण्ठ, तालव्य, मूर्धा, दन्त एवं ओष्ठ होते हैं। इसी क्रम में हिन्दी के व्यंजन होते हैं।

क ख ग घ ङ - कण्ठ
च छ ज झ ञ - तालव्य
ट ठ ड ढ ण - मूर्धा
त थ द ध न - दन्त

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प फ ब भ म – ओष्ठ

वर्णमाला के पश्चात देवनागरी की वैज्ञानिकता का आधार उसकी उच्चारण व्यवस्था है। देवनागरी के लिखित एवं उच्चरित रूप में विभिन्नता नहीं है। जो ध्वनि जिस रूप में लिखी जाती है, वही उसका उच्चरित रूप है। अंग्रेजी की भाँति 'PUT' एवं 'BUT' के उच्चरित रूप मे भिन्नता नहीं है।

वैज्ञानिकता का अन्य बिंदु देवनागरी की मात्रा व्यवस्था है। स्वरों को व्यंजनों के साथ जोड़कर लिखे जाने से उच्चारण में समस्या नहीं आती। उदाहरण के लिए शब्द 'पुकार' – प उ क आ र इससे मिलकर बना है, लेकिन एकसाथ जोड़कर लिखने से उच्चरित रूप में दुविधा नहीं होती।

देवनागरी की शिरोरेखा भी इसकी वैज्ञानिकता का कारण मानी जाती है। इससे शब्द का दैशिक विस्तार स्पष्ट

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो जाता है।

देवनागरी को सीखने के लिए मात्र तीन चिह्नों की आवश्यकता होती है। {'—' '।' 'ο'}

इस प्रकार हम देखते हैं कि देवनागरी की वैज्ञानिकता के विभिन्न आधार हैं। हालांकि आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भों को देखते हुए इसपर कुछ दोषों के होने का भी आरोप लगा है। ये आरोप निम्नलिखित हैं -

1. वर्णमाला बहुत लंबी है। अनेक चिह्न ऐसे भी हैं जिनका उच्चारण अब विलुप्त हो चुका है जैसे ऋ
2. ध्वनियों के लिए एक एक एवं केवल एक प्रतीक चिह्न नहीं है जैसे झ - झ ल - ळ
3. मात्रा व्यवस्था भी अवैज्ञानिक कभी वर्ण से पहले (पिता) कभी बाद में (गीत) कभी उपर (जैसे) कभी नीचे (भूल)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार हम देखते हैं कि देवनागरी की कुछ सीमाएं भी है जो उसकी व्यवहारिकता के कारण है। लिपियों का वैज्ञानिक होना निस्संदेह एक मानक है किन्तु व्यवहारिक होना भी उसका उद्देश्य है। इस दृष्टिकोण से देवनागरी सफल लिपि है।

अच्छा

12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी की लिंग-व्यवस्था से संबंधित समस्याओं पर विचार कीजिये। 15

हिन्दी में दो लिंग स्वीकार किए गये हैं -

1. पुल्लिंग
2. स्त्रीलिंग

स्पष्ट है कि मूल भाषा संस्कृत में तीन लिंगो की व्यवस्था हिन्दी में सरलीकरण के लिए दो लिंगो को स्वीकार करती है। हिन्दी में लिंग निर्धारण की समस्या आती है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित है

1- प्राकृतिक पदार्थों के लिंग को किस कोटि में रखा जाए। इन्हे यादृच्छिक रूप से पुल्लिंग या स्त्रीलिंग मे शामिल किया जाता है।

2- पदनामों के संबंध में भी समस्याए जैसे प्रधानमंत्री - राष्ट्रपति जब महिला इन पदों पर हो तो समस्या आती है।

3. इसके अतिरिक्त स्थानीय शब्दों के संबंध में लिंग निर्धारण मे समस्या आती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिंग निर्धारण के पश्चात लिंग व्यवस्था में समस्या लिंग परिवर्तन की है। हिन्दी में लिंग परिवर्तन किसी निश्चित वैज्ञानिक नियम पर आधारित न होकर यादृच्छिक है। यह प्रत्ययों पर आधारित है। कहीं 'ई' तो कहीं 'आई' 'इन' इत्यादि यादृच्छिक रूप से लगाकर लिंग परिवर्तन किया जाता है।

अतः हम देखते हैं कि हिन्दी में लिंग व्यवस्था संस्कृत से सरलीकरण एवं व्यवहारिकता के कारण कुछ सीमा तक अवैज्ञानिक हो गयी है। किन्तु, लोकप्रयोजन की दृष्टि से यह सरल एवं व्यवहारिक है।

अच्छा

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्माण और स्रोत की दृष्टि से हिन्दी शब्द के प्रकारों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिन्दी शब्द संपदा अत्यंत विशाल है। इसे विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत कर अध्ययन किया जाता है।

शब्द व्यवस्था

- निर्माण की दृष्टि से
  - रूढ़
  - यौगिक
  - रूढ़यौगिक
- स्रोत की दृष्टि से
  - तत्सम
  - तद्भव
  - देशज
  - विदेशज

रूढ़ शब्द : वे शब्द जिनकी ध्वनियों को पृथक कर कोई शब्द निर्मित नहीं किया जा सकता रूढ़ कहलाते हैं। जैसे पुस्तक, कलम इत्यादि

यौगिक : दो या अधिक रूढ़ शब्दों से मिलकर बनते हैं, यौगिक कहलाते हैं जैसे- अनाथ + आलय- अनाथालय

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

योगरूढ़ : वे शब्द जो यौगिक तो हैं, किन्तु किसी विशिष्ट अर्थ के लिए रूढ़ हो गये हैं। जैसे दशानन · रावण

तत्सम : वे शब्द जो संस्कृत से ज्यों के त्यों स्वीकार कर लिए गये हों।
जैसे - पुस्तक

तद्भव : वे शब्द जिनका स्रोत तो संस्कृत है, किन्तु सरलीकरण के कारण उनका रूप परिवर्तित हो गया है जैसे
~~गृह~~ → ~~घर~~ कर्म - काम

देशज : हिन्दी विभिन्न स्थानीय परम्परा के शब्दों को भी स्वीकार करती है। इन्हे देशज कहा गया है।

विदेशज : विभिन्न विदेशी संस्कृतियों के प्रभाव से उनकी भाषा के शब्द हिन्दी में स्वीकार किये गये हैं।
जैसे - डॉक्टर, पुलिस, डकैत, इत्यादि

अच्छा

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation